साहित्य अकादेमी

17 अप्रैल 2012

लेखक से भेंट

रमेश चंद्र शाह

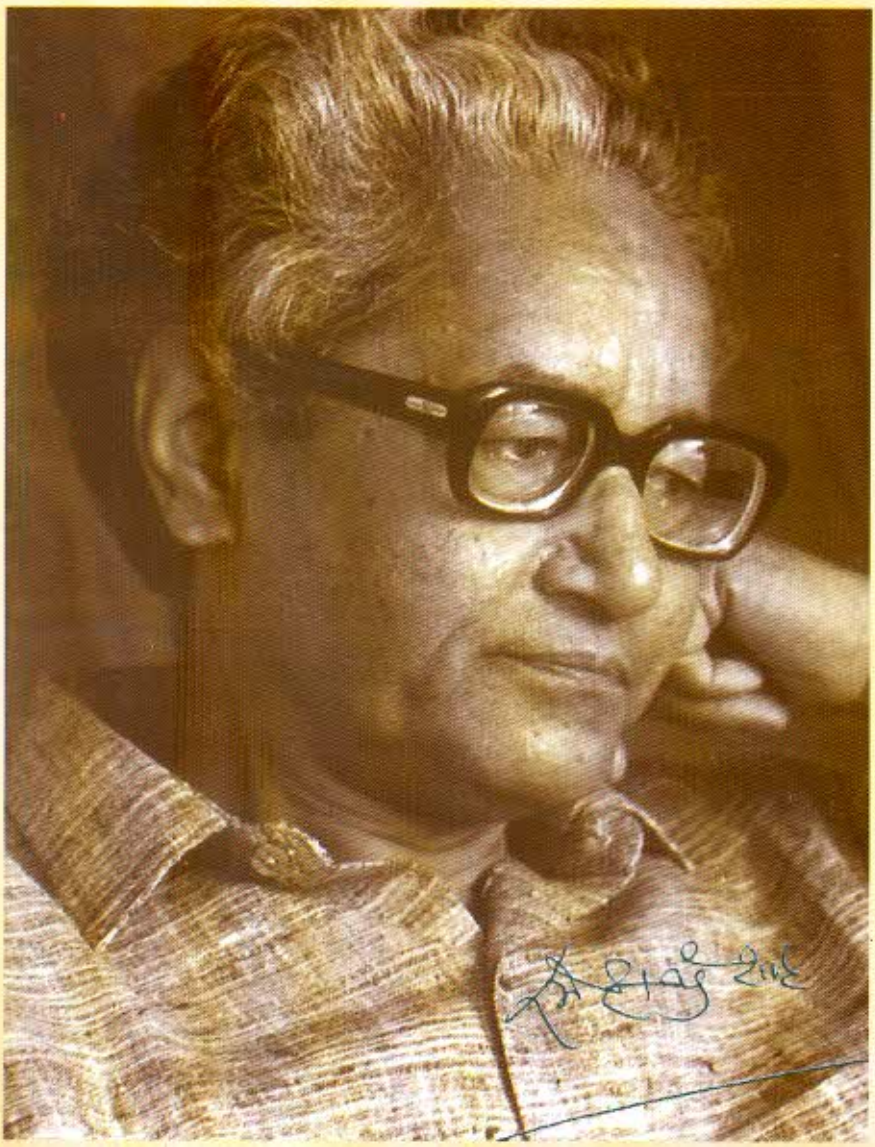

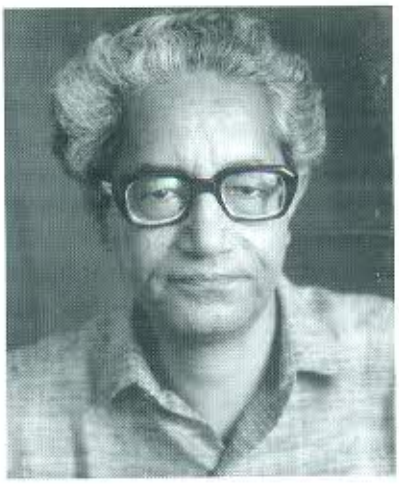

रमेश चंद्र शाह हिंदी के कुछ उन गिने-चुने लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने साहित्य की लगभग हर विधा को अपनी सर्जनात्मकता की धार दी है। एक सर्जनात्मक रचनाकार के साथ ही एक विचारक, चिंतक और बुद्धिजीवी के रूप में भी उनकी अपनी विशिष्ट पहचान है। पेशे से वे अध्यापक रहे, अंग्रेज़ी के।

एक रचनाकार के रूप में शाह कवि, समालोचक, निबंधकार, कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार के रूप में हमारे सामने आते हैं। एक अनुवादक के रूप में भी उनका महत्त्वपूर्ण अवदान है। उन्होंने यात्रावृत्त, डायरी और पत्र-लेखन भी किया है। एक रचनाकार के रूप में ये सभी भूमिकाएँ उनके व्यक्तित्व को विभाजित नहीं करतीं, बल्कि उसे एकीकृत करती हैं। साहित्य-जगत में उनकी छवि एक ऐसे बुद्धिजीवी की है जो विविध-विधाओं की व्यापक भूमिका के संदर्भ में साहित्य के प्रश्नों और अपनी सृजनात्मकता को समझने-रचने का प्रयत्न करता है। उनकी भाषा, चाहे वह आलोचना की हो, चाहे निबंधों की, चाहे कविताओं या कथा-साहित्य की, हमेशा एक संवादी मुहावरे में अपने को प्रकट करती है।

शाह की रचनात्मकता पहले-पहल कविताओं के माध्यम से ही प्रकट हुई। उनका मानना है कि वे अपनी जीवनाभूतियों को समझने के लिए, बाहरी और भीतरी अराजकता से जूझते हुए तथा उसके बीचोंबीच एक संतुलन प्राप्त करने के लिए ही कविता लिखते हैं और कविता की प्रक्रिया तथा जीवन की प्रक्रिया के बीच कहीं कोई गहरा संबंध अवश्य है। वे कहते हैं कि कविता लिखते हुए हम भाषा और शब्द की ऐसी छुपी हुई ताक़त का पता पाते हैं जो अन्यत्र नहीं पा सकते। प्रभात त्रिपाठी ने उनके कवि कर्म पर विचार करते हुए लिखा है, "...अपनी समूची सर्जनात्मक परंपरा को आत्मसात करने की एक निरंतर जारी प्रक्रिया से गुज़रते हुए ही उन्होंने अपनी आधुनिकता हासिल की है। उनकी कविता की आस्वाद-प्रक्रिया में आरंभिक और लगभग प्रत्यक्ष पाठकीय अनुभव यही होता है कि इसकी आधुनिकता एक गहरे अर्थ में, बल्कि संरचनात्मक स्तर पर सक्रिय देशज आधुनिकता है, जो अभिजन और जन की अंतर्क्रियाओं के आंतरिकीकरण की जटिल प्रक्रिया से गुज़रने पर ही हासिल हो सकती है। सामयिक सांप्रतिक अर्थ में वर्तमान को एक व्यक्ति की हैसियत से झेलते हुए यथोचित प्रश्नाकुलता, जिज्ञासा और व्यक्तिगत हिस्सेदारी के साथ वे कविता के रूपाकार के प्रश्न को भी उतना ही महत्त्व देते हुए उसे 'रचते' हैं जितना अनुभव और ज्ञान से प्राप्त अंतर्दृष्टि को।...प्रकृति, परंपरा, परिवेश और पुराण को अपने में समोने की कोशिश करती उनकी कविता अपनी पद्यात्मक सुघड़ता और रंजकता के बावजूद जीवन की जटिलताओं से बच निकलने और आत्म को महफ़ूज बनाए रखने की कविता नहीं है। इतिहास पुराण बाँचते हुए संप्रति की आँच में दहते हुए भी शाह साधारण जन की ही दुनिया के व्यक्ति हैं।"

उनकी कविताओं में समाज वर्गों में बँटा नहीं नज़र आता, बल्कि एक अविभक्त सगुण इकाई के रूप में सामने आता है। उन्होंने बाल-कविताएँ भी लिखी हैं और कुमाऊँनी में भी उनका एक कविता-संग्रह है— *उकाव हुलार* के नाम से। राजेश जोशी उनकी कविता 'हरिश्चंद्र आओ' को ऐसी कोशिश के रूप में देखते हैं जो अपनी भाषा की उन मुद्राओं, सामर्थ्य और सामर्थ्य की खोज है जो अभिव्यक्ति के विरुद्ध सक्रिय राजनैतिक-सामाजिक अवरोधों को एकबारगी चमका देकर कठिन समय में बात और आक्रोश को दूसरों तक पहुँचा सके। ध्यातव्य है कि यह कविता आपातकाल के दौरान ही *पूर्वग्रह* में प्रकाशित हुई थी।

शाह कथा साहित्य के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे हैं और कहानीकार तथा उपन्यासकार के रूप में उनकी चर्चा रही है। उनके उपन्यास *गोबर गणेश, क़िस्सा गुलाम, पूर्वापर, आख़िरी दिन, सफ़ेद पर्दे पर* और कहानी-संग्रह *जंगल में आग, मुहल्ले का रावण, मानपत्र, थिएटर, गेटकीपर* आदि चर्चित रहे हैं। उनकी कहानियों की एक विशेषता यह भी है कि उन पर कई-कई विधाओं की छाया दिखाई पड़ती है; कहीं आत्मकथा, कहीं रिपोर्ताज तो कहीं निबंध वहाँ आवाजाही करते दिखते हैं, जिससे उनमें एक तरह के नएपन का अहसास होता है। उनकी कहानियों में बतकही-सा आनंद, लोक-कथाओं जैसा औत्सुक्य भाव, गंभीर से गंभीर बात को अत्यंत सहजता एवं सरलता से कहने की कला और चुहल तथा विनोदवृत्ति मिलती है। शाह की कई कहानियों में वृद्धावस्था की समस्याओं को कई-कई कोणों से उठाया गया है, लेकिन उनमें कहीं दुहराव नहीं आने पाया है। जीवन की अन्यान्य स्थितियों और समस्याओं पर भी उनकी सतर्क दृष्टि गई है और पहाड़ के सौन्दर्य को भी उन्होंने अपनी कहानियों में उकेरा है।

गोबर गणेश शाह का पहला उपन्यास है

जिसके केंद्र में एक बालक विनायक है। इसमें लेखक ने विनायक की मानसिकता के उन सूत्रों को तलाशने की कोशिश की है जो जीवन में चरित्र का निर्धारण-नियामक रूप में संचालन करते हैं। यह अज्ञेय की औपन्यासिक कृति *शेखर : एक जीवनी* की याद दिलाता है। उनका दूसरा उपन्यास *क़िस्सा ग़ुलाम* पुराने मूल्यों, मान्यताओं और सिद्धांतों को परे रखकर नए सिरे से स्थितियों को परिभाषित करता है। इसमें ग़ुलामी के संस्कारों में जकड़ी पीढ़ियों की मनोभूमिका को उजागर करने का कई स्तरों पर सार्थक प्रयास किया गया है। ऊपर से मुक्त और शिक्षित व्यक्तियों में भी यह ग़ुलामी की मानसिकता कहीं गहरे बद्धमूल है। आज़ादी के बाद के जनमानस को यह उपन्यास बहुत ही सूक्ष्मता से उजागर करता है। कथानायक कुंदन को भारत में मिशनरी धर्म-प्रचार, अंग्रेज़ी शिक्षा, आदिवासियों की मदद करने की स्थितियों के पीछे उपनिवेशवादी साम्राज्यवादी ग़ुलामी का चक्र दिखाई देता है और उसे लगता है कि यूरोपीय सभ्यता—संस्कृति, भाषा, धर्म, विज्ञान, टेक्नोलॉजी आदि सभी क्षेत्रों में ग़ुलामी को क़ायम रखने की चाल इस देश में चल रही है। यह एक अभिनव कथा-प्रयोग है। शाह ने अपने उपन्यास *सफ़ेद परदे पर* में वृद्धावस्था के एकाकीपन और ऊब को एक दार्शनिक अंदाज़ में व्यक्त किया है।

एक निबंधकार के रूप में भी शाह की ख्याति है। उन्होंने आत्मव्यंजक और विचारात्मक दोनों ही तरह के निबंध लिखे हैं। जहाँ आत्मव्यंजक निबंधों में उन्होंने संवेदना के नए आयाम प्रस्तुत किए हैं, वहीं विचारात्मक निबंधों में उनके मौलिक विचारों और गहन चिंतन को देखा जा सकता है। उनके चिंतन में दर्शन के तत्त्वों का परिपाक बराबर मिलता है, जिनके माध्यम से वे आधुनिकता और परंपरा की टकराहट से उपजी समस्याओं का समाधान देने का प्रयास करते हैं।

शाह समालोचना की दुनिया में भी सक्रिय रहे हैं। इस संदर्भ में उनका कहना है, "मैं आलोचना में इसलिए प्रवृत्त हुआ कि साहित्य में सच की बात को ज़ोर देकर कह सकूँ और कृतियों के सीधे मर्मास्वादन, विश्लेषण के द्वारा उस बात को स्थापित कर सकूँ जो आलोचना साहित्य की इतनी बड़ी संभावना व शक्ति को न पहचानकर उसे किसी दूसरे अनुशासन का पिछलग्गू बनाने में जुटी दिखती है, उसका भी डटकर प्रत्याख्यान कर सकूँ।" उन्होंने इस कार्य को बख़ूबी अंजाम दिया है। उन्होंने न के बल अपने निकट समकालीन अग्रजों बल्कि अज्ञेय, निर्मल वर्मा, मुक्तिबोध, रेणु, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, शमशेर और विजयदेव नारायण साही के रचनाकर्म का सजगता से मूल्यांकन किया है। आलोचना-कर्म उनके लिए उनके कवि-कर्म का ही एक अंग या विस्तार है।

रमेशचंद्र शाह ने उन्हीं रचनाकारों पर लिखा है, जिनकी रचनाओं से उनके आलोचक मन का एक रिश्ता क़ायम हो सकता है या कि जो उनके भाव और विचार लोक के निकट पड़ते हैं। एक कवि और चिंतक के रूप में अज्ञेय ने संभवत: उन्हें सबसे अधिक आकृष्ट किया। उन्होंने उन पर ही सर्वाधिक लिखा और उन्हें ही अपनी आलोचना में सबसे अधिक उद्धृत भी किया। वे अज्ञेय को हिंदी कविता में आधुनिक भावबोध का अग्रदूत मानते है, क्योंकि अज्ञेय में पाश्चात्य बौद्धिक विमर्श के साथ अपनी परंपरा के प्रति समान जागरूकता है। हिंदी आलोचना की जो वर्तमान स्थिति है, शाह ने उसमें अपने आलोचनात्मक लेखन द्वारा सार्थक हस्तक्षेप किया है और उसके परिष्कार में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

कवि, कथाकार, निबंधकार, चिंतक एवं आलोचक के साथ शाह हमारे सामने नाटककार, यात्रावृत्तांत लेखक, अनुवादक और संपादक के रूप में भी आते हैं। उनका रचना-संसार अत्यंत व्यापक है और साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी रचनाओं के माध्यम से हर बार कुछ नया और अर्थपूर्ण करना चाहते हैं। सृजन के व्यापक फलक पर जीवन की गहन-गूढ़ चिंतनयुक्त सहज प्रवाहमयी अभिव्यंजना शाह को प्रसाद और अज्ञेय की परंपरा में ला खड़ा करती है।

प्रमुख कृतियाँ

काव्य-संग्रह

1. कछुए की पीठ पर	'पहचान' शृंखला में अशोक वाजपेयी द्वारा संपादित	1974
2. हरिश्चंद्र आओ	प्रकाशन संस्थान, दिल्ली	1980
3. नदी भागती आई	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1988
4. उकाव हुलार (कुमाऊँनी कविता संग्रह)	अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा	1993
5. प्यारे मुचकुंद को	किताबघर, दिल्ली	1994
6. चाक पर	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1998
7. देखते हैं शब्द भी अपना समय	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	2000
8. अनागरिक	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	2004
9. आधुनिक कवि-माला	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	2010

साहित्यालोचन

1. समानांतर	सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद	1973
2. छायावाद की प्रासंगिकता	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	1974
3. जय शंकर प्रसाद (विनिबंध)	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	1979
4. वागर्थ	संभावना प्रकाशन, हापुड़	1981
5. सबद निरंतर	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1987
6. अज्ञेय (विनिबंध)	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	1990
7. भूलने के विरुद्ध	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1990
8. अज्ञेय : वागर्थ का वैभव	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1995
9. आलोचना का पक्ष	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1998
10. समय संवादी	सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर	2005

उपन्यास

1. गोबर गणेश	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1978
2. क़िस्सा ग़ुलाम (सजिल्द)	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,	1986
(पेपर बैक)	-वही-	1990
3. पूर्वापर	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1990
4. आख़िरी दिन	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1992
5. पुनर्वास	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1995
6. आप कहीं नहीं रहते विभूतिबाबू	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	2001
7. सफ़ेद परदे पर	किताबघर, दिल्ली	2006
8. कमबख़्त इस मोड़ पर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2007
9. विनायक	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2010
10. असबाब-ए-वीरानी	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2011
11. कथा सनातन	राजपाल एंड संज, दिल्ली	2012

संपादित कृतियाँ

1. जड़ की बात	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली	1988
2. प्रसाद रचना संचयन	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	1991
3. अज्ञेय काव्य स्तबक	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	1995
4. निराला संचयिता	म.गाँ, अ. वि, वर्धा के लिए	2001

सर्वविधा संकलन

1. बहुवचन	किताबघर, दिल्ली	1998
2. मेरे साक्षात्कार	किताबघर, दिल्ली	2004

कहानी-संग्रह

1. जंगल में आग	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली	1978
2. मुहल्ले का रावण	संभावना प्रकाशन, दिल्ली	1982
	पुनर्मुद्रण: वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1992

3. मानपत्र	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1992
4. मेरी प्रतिनिधि कहानियाँ	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1994
5. थिएटर	वाग्देवी, प्रकशन, बीकानेर	1998
6. चर्चित कहानियाँ	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	1998
7. गेटकीपर	रेमाधव प्रकाशन, नोएडा	2007

यात्रावृत्त

1. एक लंबी छाँह	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2000

निबंध-संग्रह

1. रचना के बदले	शब्द लोक प्रकाशन, वाराणसी	1969
2. शैतान के बहाने	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	1980
	पुनर्मुद्रित : सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर	2007
3. आड़ू का पेड़	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1984
4. पढ़ते-पढ़ते	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली	1987
5. स्वधर्म और कालगति	किताबघर, दिल्ली	1996
6. स्वाधीन इस देश में	अल्मोड़ा बुक डिपो, अल्मोड़ा	1996
7. नेपथ्य से	किताबघर, दिल्ली	2002
8. हिंदी की दुनिया में	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2007
9. देहरी की बात	सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली	2009
10. अगुन-सगुन बिच	सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली	2011

नाटक

1. मारा जाई ख़ुसरो	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1982

अनुवाद

1. मटियाबुर्ज (*राशोमन* का अनुवाद)	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली	1990
2. छंद और पक्षी (काव्यानुवाद)	सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर	2005
3. दूर देखती आँखें (काव्यानुवाद)	सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर	2005

डायरी

1. अकेला मेला	किताबघर, दिल्ली	2009
2. इस खिड़की से	किताबघर, दिल्ली	2010

अंग्रेज़ी में प्रकाशित ग्रंथ

1. जयशंकर प्रसाद (विनिबंध)	साहित्य अकादेमी, दिल्ली	1978
2. येट्स एंड एलियट : पर्सपैक्टिव्ज ऑन इंडिया	एकेडमिक पब्लिशर्स, न्यू जर्सी	1983
3. ऐनसेस्ट्रल वॉयसेस्	एमेनॉस एकेडेमी, लंदन	2001
4. दस स्योक भर्तृहरि	राजपाल एंड संज	2009
5. पूर्वापर (बिफ़ोर एंड आफ़्टर)	नेशनल पब्लिशिंग हाउस	2012

बाल साहित्य

1. गोलू के मामा	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली	1984
2. जादू सपना	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली	1991
3. हाथी की करतूत	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली छठा संस्करण	2004
4. नाना के गीत	नेशनल बुक ट्रस्ट	2010
5. दो बाल नाटक : 'फ़ाटक' तथा 'टिम्बकटू'	नया संस्करण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2012

प्रमुख घटनाएँ एवं सम्मान

1937	:	बैशाख त्रयोदशी को अल्मोड़ा, उत्तरांचल में जन्म
1942-1954	:	आरंभिक से लेकर इंटरमीडिएट तक की शिक्षा, अल्मोड़ा में
1952	:	पहली कविता 'देवदारु' *शिक्षा* साप्ताहिक, अल्मोड़ा में प्रकाशित

1956	:	बी.एस-सी. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से
1960	:	आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए.
1960	:	गंज डुंडवारा महाविद्यालय, जि.एटा, उ.प्र. में प्राध्यापक नियुक्त
1961	:	हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल में अध्यापक नियुक्त
1965	:	वीरेंद्र कुमार जैन की सुपुत्री ज्योत्सना मिलन से विवाह
1966	:	पुत्री शम्पा शाह का जन्म
1974	:	पहला कविता-संग्रह, *कछुए की पीठ पर* प्रकाशित
1974	:	*कहानी* पत्रिका का सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार
1974	:	पुत्री राजुला शाह का जन्म
1978	:	प्रथम उपन्यास *गोबर गणेश* का प्रकाशन
1978	:	आलोचना पुस्तक *छायावाद की प्रासंगिकता* पर म.प्र. साहित्य परिषद् के नंद दुलारे वाजपेयी पुरस्कार से सम्मानित
1978	:	युगोस्लाविया, हंगरी और चेकोस्लोवाकिया की यात्रा
1979	:	उपन्यास *गोबर गणेश* पर म.प्र. साहित्य परिषद् का वीर सिंह देव पुरस्कार
1987-88	:	म.प्र. संस्कृति विभाग का शिखर सम्मान
1989	:	कविता-संग्रह *नदी भागती आई* के लिए म.प्र. साहित्य परिषद का भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार
1994	:	*पूर्वापर* उपन्यास के लिए भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता का पुरस्कार
1997	:	हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल से अंग्रेजी विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त
1997-2000	:	निराला सृजनपीठ के निदेशक
1998	:	एमेनॉस एकेडेमी, लंदन में वैदिक और वेदोत्तर काव्य पर व्याख्यान
2001	:	के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा व्यास सम्मान
2001	:	विमलादेवी न्यास, अयोध्या का द्विजदेव सम्मान
2002	:	पोलैंड की यात्रा
2004	:	भारत सरकार द्वारा पद्मश्री अलंकरण
2005	:	केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से यात्रा-वृत्त *एक लंबी छाँह* के लिए महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार
2007	:	हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि
2009	:	म.प्र. संस्कृति विभाग का राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान